Gyanvividha, Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026 : PP-75-78

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-4.5
Vol.-3; Issue-2 (Apr.-June) 2026
Page No.- 75-78
©2026 Gyanvividha
https://journal.gyanvividha.com

Author's :

डॉ. आनंद कुमार कश्यप

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय, मस्तूरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत.
वर्तमान पदस्थापना : विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम विभाग, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

Corresponding Author :

डॉ. आनंद कुमार कश्यप

सहायक प्राध्यापक एवं विभागाध्यक्ष, हिंदी विभाग, शासकीय पातालेश्वर महाविद्यालय, मस्तूरी, बिलासपुर, छत्तीसगढ़, भारत.
वर्तमान पदस्थापना : विशेष कर्तव्यस्थ अधिकारी, छत्तीसगढ़ शासन, वाणिज्य और उद्योग एवं श्रम विभाग, रायपुर, छत्तीसगढ़, भारत

पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी की रचनाओं का अकादमिक मूल्यांकन

शोध सारांश (ABSTRACT) : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी एक समालोचक के रूप में पुरे देश में प्रसिद्ध हैं। बख्शी जी साहित्य वाचस्पति से सम्मानित है जो उन्हें उनकी साहित्यिक ज्ञान में निपुणता हेतु प्रदत्त था। छत्तीसगढ़ शासन के अंतर्गत साहित्य अकादमी (छत्तीसगढ़ संस्कृति परिषद) द्वारा प्रतिवर्ष इनका जयंती समारोह धूमधाम से मनाया जाता है। बख्शी जी ने 1920 से 1925 तक प्रसिद्ध पत्रिका "सरस्वती" का संपादन किया। इनके निबंधों में हिंदी ललित निबंध की एक विशिष्ट शैली मिलती है, जो ज्ञानवर्धक होने के साथ-साथ मनोरंजक भी होती है। बख्शी जी की रचनाएँ सुधारवादी, मानवतावादी और नैतिक मूल्यों पर आधारित हैं। समग्र रूप से, उनके निबंध भारतीय मानवतावादी मूल्यों और सामाजिक गतिशीलता का एक तार्किक और सारगर्भित मूल्यांकन प्रस्तुत करते हैं।

प्रमुख शब्द (Keywords): पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी, वाचस्पति सम्मान, सुधारवादी, मानवतावादी व नैतिक मूल्य।

प्रस्तावना : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी जी का जन्म 27 मई 1894 को राजनांदगांव (छत्तीसगढ़) के खैरागढ़ में हुआ था। उन्हें 'मास्टरजी' के नाम से भी जाना जाता था। उनके पिता श्री पुन्नालाल बख्शी जी एवं माता श्रीमती मनोरमा देवी जी थीं। बख्शी जी छत्तीसगढ़ के पहले हिंदी साहित्यकार हैं जिन्हें राष्ट्रीय प्रसिद्धि प्राप्त हुई। उन्होंने जुलाई 1911 में अपनी पहली अनूदित कहानी 'भाग्य' प्रकाशित की। बख्शी जी कठोर अंधविश्वास और सामाजिक रुढ़ियों की आलोचना करते हैं, फिर भी वे पारंपरिक मूल्यों और नैतिक सदाचार का समर्थन करते हैं। उनके विचार सार्वभौमिक भावनात्मक लचीलापन और नैतिक कर्तव्य पर केंद्रित हैं। उनकी रचनाएँ सुधारवादी, मानवतावादी और व्यक्तिगत नैतिकता पर आधारित हैं। सन् 1924 में बख्शी जी की दो महत्वपूर्ण आलोचनात्मक

पुस्तकें जैसे 'हिंदी साहित्य विमर्श' और 'विश्व साहित्य' प्रकाशित हुई जिनमें भारतीय और पाश्चात्य साहित्य सिद्धांतों का अद्भुत समन्वय प्रतीत होता है। वे अपने 'ललित निबंधों' के लिए भी प्रसिद्ध हैं जिनमें नाटक जैसी रमणीयता और कहानी जैसी रोचकता मौजूद है। उनके लेखन में शिष्ट और गंभीर व्यंग्य-विनोद का भी प्रमुख स्थान है। उनका पहला निबंध 'सोना निकालने वाली चींटियाँ' 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित हुआ। उन्होंने 'पंचपात्र' और 'प्रदीप' जैसी महत्वपूर्ण पाठ्यपुस्तकों की भी रचना की।

बख्शी जी के निबंधों में आध्यात्मिकता, समाज-सुधार और लोकजीवन का गहरा संगम मिलता है । बख्शी जी के अनुसार, सभ्यता भौतिक क्षेत्र की प्रगति है जबकि संस्कृति मानसिक और आध्यात्मिक विकास की परिचायक है जो मनुष्य को पशुता से ऊपर उठाकर सभ्य बनाती है । वे कला को संस्कृति की वाहिका और 'रस' को उसकी आत्मा मानते हैं, जो ईश्वर तक पहुँचने का एक आनंदमय मार्ग प्रदान करती है । उन्होंने वेदों और विशेषकर महाभारत को भारतीय साहित्य की 'अक्षय निधि' के रूप में विश्लेषित किया है, जिसमें धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष का व्यापक निरूपण मिलता है । इसके साथ ही उन्होंने भारतीय संस्कृति पर इस्लाम और यूरोपीय सभ्यता के प्रभावों को स्वीकारते हुए आधुनिक भारत में पश्चिमी संस्कृति के अंधानुकरण और नैतिक मूल्यों के ह्रास के प्रति सचेत किया है ।

'झलमला' कहानी में एक दार्शनिक और कौतुकपूर्ण शैली है जहाँ बालसुलभ जिज्ञासा और कौतूहल को दर्शाया गया है। सन् 1916 में 'सरस्वती' पत्रिका में प्रकाशित यह रचना, हिंदी साहित्य की प्रारंभिक और श्रेष्ठ लघुकथाओं में से एक मानी जाती है जो ग्रामीण जीवन व बाल मनोविज्ञान को दर्शाती है। 'पंचपात्र' संग्रह में साहित्यिक, विचारात्मक और ललित निबंध शामिल हैं, जो बख्शी जी की सूक्ष्म दृष्टि और सहज शैली को दर्शाते हैं। अश्रुदल और उनकी कथात्मक रचनाओं में भावनात्मक उतार-चढ़ाव उनके पात्रों की आंतरिक मनोवैज्ञानिक वास्तविकताओं को उजागर करते हैं। उनके साहित्य का अकादमिक पठन यह इंगित करता है कि उन्होंने निस्वार्थ स्नेह, पारिवारिक कर्तव्य और बलिदान जैसी सार्वभौमिक मानवीय भावनाओं पर ध्यान केंद्रित किया। उनके महिला पात्रों को जिन संघर्षों का सामना करना पड़ता है, उन्हें आम तौर पर प्रणालीगत वर्ग या जाति युद्ध के बजाय मानवीय आत्मा के नैतिक और भावनात्मक परीक्षणों के रूप में देखा जाता है।

तालिका 1: बख्शी ग्रन्थावली की विधा, विवरण एवं प्रमुख विशेषताएँ

खण्ड	विधा	विवरण एवं प्रमुख विशेषताएँ
1	कविताएँ, नाटक/एकांकी एवं उपन्यास	बख्शी जी का साहित्य में प्रवेश कवि के रूप में हुआ। इस खण्ड में उनके व्यक्तित्व का अक्स, उपन्यासकार के रूप में उनकी मौलिकता और अनूदित रचनाएँ संकलित हैं।
2	कथा साहित्य एवं बाल कथाएँ	इसमें 1916 में प्रकाशित उनकी पहली कहानी 'झलमला' और 'बालकथा माला' शामिल है। रचनाओं में छत्तीसगढ़ की संस्कृति, लोककथाओं और त्योहारों (जैसे अखती, कमरछठ) का जीवन्त चित्रण है।
3	समीक्षात्मक निबन्ध	सृजनात्मक और तुलनात्मक समीक्षा पर आधारित। इसमें 'यदि मैं लिखता' शीर्षक से प्रमुख रचनाओं की समीक्षा है। उन्हें हिन्दी में 'तुलनात्मक समीक्षा' का जनक माना जा सकता है।

4	साहित्यिक निबन्ध	ये निबन्ध 'आत्मकथात्मक' और 'विश्व-साहित्य' के परिचय से युक्त हैं। इसमें प्रसिद्ध निबन्ध 'स्मृति' संकलित है, जो तत्कालीन सामाजिक और राजनैतिक परिवेश को दर्शाता है।
5	साहित्यिक एवं सांस्कृतिक निबन्ध	बख्शी जी को आचार्य द्विवेदी का उत्तराधिकारी माना गया है। इसमें 'विश्व-साहित्य', 'हिन्दी साहित्य विमर्श' और प्रसिद्ध निबन्ध 'समाज सेवा' शामिल हैं, जो जीवन की सच्चाइयों को प्रतिबिम्बित करते हैं।
6	संस्मरणात्मक निबन्ध	इसमें बाल्यकाल से जीवन के अंत तक के व्यक्तियों के संस्मरण हैं। इसकी विशेषता यह है कि ये केवल विशिष्ट नहीं, बल्कि सामान्य व्यक्तियों और लोकजीवन पर भी आधारित हैं।
7	अन्य निबन्ध	इन निबन्धों पर पाश्चात्य लेखकों (जैसे स्टीवेंसन, गार्डनर) की शैली का प्रभाव है। इसमें उनके अध्यापकीय जीवन की नैतिकता, राष्ट्रीय आन्दोलनों के प्रति दृष्टिकोण और लेखन की विशिष्ट ऊर्जा समाहित है।
8	अन्य निबन्ध, सम्पादकीय एवं डायरी	'सरस्वती' पत्रिका के सम्पादक के रूप में उनकी ख्याति और पन्त, प्रेमचन्द जैसे लेखकों को प्रोत्साहन देने का विवरण। उनकी डायरियाँ साहित्य के प्रति उनके समर्पण का अमूल्य दस्तावेज हैं।

'साहित्य वाचस्पति' हिंदी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग द्वारा 1938 से प्रदान की जाने वाली सर्वोच्च मानद उपाधि है जो हिंदी भाषा और साहित्य के क्षेत्र में अद्वितीय एवं असाधारण योगदान के लिए दिया जाता है। इसका अर्थ साहित्यिक ज्ञान में पूर्ण निपुणता है, जिसे शैक्षिक जगत में 'डॉक्टर ऑफ लिटरेचर' के समकक्ष माना जाता है। महान साहित्यकार और 'सरस्वती' पत्रिका के यशस्वी संपादक पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी को 1949 में इस गौरवपूर्ण उपाधि से नवाजा गया था। यह उपाधि साहित्य जगत में किसी लेखक की बौद्धिक श्रेष्ठता और उसकी जीवनभर की साहित्य-साधना का सबसे बड़ा प्रमाण मानी जाती है।

बख्शी जी के लेखन पात्र सामाजिक परिवर्तन के लिए कट्टरपंथी या उग्र आह्वान नहीं करते है बल्कि सभी पात्र समग्र रूप से साहित्यिक पुल के रूप में कार्य करते हैं, जो तर्क, सहानुभूति और मानवीय मूल्यों को सम्मिलित करके परंपरागत मूल्यों में सुधार लाते हैं। साथ ही उनका साहित्य सामान्यतः 'भारतीय नारीत्व' का आदर्शवादी दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है जो जाति और आर्थिक स्थिति से निर्धारित दृष्टिकोण के बजाय नैतिक कर्तव्य और भावनात्मक गहराई पर केंद्रित है। उन्होंने विचारक के रूप में शोरगुल वाले विद्रोह के बजाय शांत आत्मनिरीक्षण और नैतिक स्पष्टता के माध्यम से भारतीय मनोवृत्ति को ऊपर उठाने का प्रयास किया।

निष्कर्ष : पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी द्विवेदी युग के एक प्रमुख साहित्यकार थे। उनकी भाषा शुद्ध और साहित्यिक खड़ीबोली है जिसमें संस्कृत के तत्सम शब्दों का खूब प्रयोग होता है। उन्होंने समीक्षात्मक, भावात्मक, विवेचनात्मक और व्यंग्यात्मक शैलियों में लेखन किया। उनका साहित्यिक करियर शुरुआत एक कवि के रूप में हुआ। बख्शी जी ने अध्यापन और संपादन के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान दिया। उन्होंने कविता, कहानी और निबंध जैसी विधाओं में

लिखा। लेकिन उनका मुख्य पहचान निबंधकार के रूप में बनी। बख्शी जी 'मनसा, वाचा, कर्मणा' की भावना से काम करनेवाले समर्पित साहित्यकार थे जो मान-प्रतिष्ठा और पद की लालसा से मुक्त होकर निरंतर साहित्य सृजन में लगे रहे। उन्होंने अपने मौलिक रचनाओं के साथ-साथ देश-विदेश के कई प्रसिद्ध लेखकों की रचनाओं का सारानुवाद भी कर हिन्दी साहित्य को विश्व स्तर पर फैलाया।

सन्दर्भ ग्रन्थ :

1. **कायस्थ चैरिटेबल ट्रस्ट जयपुर (राजस्थान).** https://shortlink.uk/1pcEa
2. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 1)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
3. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 2)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
4. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 3)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
5. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 4)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
6. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 5)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
7. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 6)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
8. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 7)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
9. **बख्शी, प. पु. (2007).** *बख्शी ग्रन्थावली* **(खण्ड 8)** (न. श्रीवास्तव, संपा.). वाणी प्रकाशन.
10. **सुनीता. (2019).** पदुमलाल पुन्नालाल बख्शी के निबंधों का अध्ययन. Research Review International Journal of Multidisciplinary, 4(3).

•